

Chapter-7: समकालीन विश्व में सुरक्षा

- शांति को खतरे मुक्ति या खतरे से रक्षा
- किसी समाज व राष्ट्र के आधारभूत केन्द्रीय मूल्यों की ऐसे किसी भी खतरे से करने जो उन्हें नष्ट या विकृत करने वाला हो
- केन्द्रीय मूल्य - सम्प्रभुता + स्वतंत्रता + क्षेत्रीय अखण्डता

सुरक्षा के प्रकार -

1. परम्परागत - (A) बाह्य सुरक्षा (B) आंतरिक सुरक्षा
2. अपरम्परागत - (A) मानव सुरक्षा (B) विश्व सुरक्षा

परम्परागत सुरक्षा :- किसी राष्ट्र की स्वतंत्रता को हानि पहुंचाने वाले खतरे से मुक्ति

(A) बाह्य सुरक्षा :- दूसरे देश द्वारा किये जाने वाला आक्रमण तथा युद्ध बुनियादी स्तर पर किसी सरकार के पास युद्ध की स्थिति में तीन विकल्प होते हैं

1. आत्मसमर्पण करना
2. **अपरोधा :-** सुरक्षा नीति का संबंध युद्ध की आशंका को रोकना है
3. **रक्षा :-** युद्ध को सीमित रखने अथवा उसको समाप्त करने से होता है

परम्परागत सुरक्षा के उपाय :-

1. **शक्ति संतुलन :-** पड़ोसी देश के बराबर या अधिक सैन्य क्षमता का विकास
2. **सैन्य गठबन्धन :-** अनेक देशों द्वारा सैन्य समझौते करके गठबन्धन बनाना
3. **निशस्त्रकरण :-** देशों द्वारा अस्त्रों के भण्डार में कटौती

4. **न्याययुद्ध** :- युद्ध का प्रयोग आत्म रक्षा या दूसरों को जनसंहार से बचानी
5. **विश्वास बहाली** :- देशों में एक दूसरे के प्रति विश्वास की भवन का विकास

(B) **आंतरिक सुरक्षा** :- जब देश की शासन व्यवस्था कमजोर हो तो वहां ग्रीहयुद्ध, आंतरिक कलह उत्पन्न होते हैं और पड़ोसी शत्रु इसका लाभ उठाकर आक्रमण कर देते हैं

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आंतरिक सुरक्षा का महत्व कम होना व खतरे की आशंका होना :-

1. पश्चिमी देशों द्वारा अपनी सीमा के अंदर एकीकृत और शान्ति सम्पन्न होना
2. पश्चिमी देशों के सामने अपनी सीमा के भीतर बसे समुदायों अथवा वर्गों से गंभीर खतरा नहीं था

बाहरी खतरे की आशंका :-

1. अमेरिका व सोवियत संघ को अपने उपर एक दूसरे से सैन्य हमले का डर था
2. यूरोपीय देशों को अपने उपनिवेशों में वहां की जनता से युद्ध की चिंता सता रही थी ये लोग आजादी चाहते थे जैसे फ्रांस को वियतनाम व ब्रिटेन को केन्या से जुशना पड़ा

एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्र देशों के सम्मुख की चुनौतियां

1. अपने पड़ोसी देश से सैन्य हमले की आशंका सीमा रेखा, भूक्षेत्र तथा आबादी पर नियंत्रण को लेकर
2. **अंदरूनी सैन्य संघर्ष** :- अलगाववादी आंदोलनों से खतरा जो अलग राष्ट्र बनाना चाहते थे

निशस्त्रीकरण संधियां :-

1. जैविक हथियार संधि (BWC) - 1972 में 155 देशों ने जैविक हथियार उत्पादन पर रोक
2. रसायनिक हथियार संधि (CWC) - 1992 में 181 देशों ने रसायनिक हथियार रोक
3. एंटीबैलेस्टिक मिसाइल संधि (ABM) - प्रक्षेपास्त्रों के भंडार में कमी करना
4. सामरिक अस्त्र न्यूनीकरण संधि (START) - घातक हथियारों की संख्या में कमी
5. सामरिक अस्त्र परिसीमन संधि (SALIT) - 1992 घातक हथियार परिसीमन
6. परमाणु अप्रसार संधि (NPT) - 1968 में संधि 1967 के बाद परमाणु हथियारों का निर्माण नहीं

गैर परम्परागत सुरक्षा :-

1. **मानव सुरक्षा :-** सुरक्षित राज्य का अर्थ जनता का सुरक्षित होना नहीं है युद्ध मानवाधिकार उल्लंघन, जनसंहार व आतंकवाद से अधिक लोग अकाल महामारी व आपदा से मरते हैं अर्थात अभाव तथा भय से मुक्ति
2. **वैश्विक सुरक्षा :-** जिन खतरों का सामना कोई देश अकेले नहीं कर सकता यह वैश्विक प्रकृतिक की समस्या है इनके समाधान के लिए वैश्विक सहयोग आवश्यक है

खतरे या भय के नवीन स्रोत :-

(A) मानवता की सुरक्षा के खतरे :-

1. आतंकवाद
2. विश्वव्यापी निर्धनता
3. असमानता
4. शरणार्थियों की जीवन बाधाये

(B) विश्व सुरक्षा के खतरे :-

1. महामारियां
2. पर्यावरण प्रदूषण
3. प्राकृतिक आपदाये
4. वैशिवक ताप व्रीद्दी
5. जनसख्या व्रीद्दी
6. एड्स और बर्ड फल्लू

मानवाधिकार विषयक चर्चा :-

1. राजनीतिक अधिकार जैसे अभिव्यक्ति व सभा करने की आजादी
2. आर्थिक और सामजिक अधिकार
3. उपनिवेशक्रीत जनता तथा जातीय और मूलवासी अल्पस्ख्यक के अधिकार इन वर्गीकरण को लेकर व्यापक सहमति है लेकिन किसे सार्वभौम मानवाधिकार की संज्ञा दी जाए इस पर सहमति नहीं है

मानवाधिकार की सुरक्षा :-

1. संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणापत्र में अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को अधिकार देता है कि वह मानवाधिकार की रक्षा के लिए हथियार उठाये
2. संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार उल्लंघन के किस मामले में कारवाई करेगा और किसमें नहीं

भारत की सुरक्षा रन्नीतिया :-

1. अपनी सैन्य क्षमता बढना
2. अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों की मजबूती में सहयोग करना
3. आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था बढना
4. सामाजिक असमानता दूर करना
5. आर्थिक असमानता कम करना
6. सहयोग मूलक सुरक्षा नीति
7. सैन्य गुटबंदी से अलग

सुरक्षा के लिए सहयोग :-

1. संतुलन व गठबन्धन की स्थापना - सहयोग से
2. नवीन खतरे, आपदा से सुरक्षा, सेना नहीं - सहयोग से
3. आतंकवाद से सुरक्षा, सेना नहीं - सहयोग से
4. गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण समाप्ति में अमीर देशों का - सहयोग
5. महामारियों को व बीमारियों को फैलने से रोकने - सहयोग द्वारा
6. सरकार यदि मानवाधिकारो का हनन करे तो मुक्ति के लिए जरूरी है अन्तर्राष्ट्रीय समाज का - सहयोग